जहां सपने, संघर्ष और भावनाएं एक साथ परीक्षा देती है।

प्रेम, प्रतीक्षा और परीक्षा

सपनों के बीच खोया

नीतीश कुमार

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Nitish Kumar 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69726-51-1

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: June 2026

समर्पण

उन सभी छात्रों और प्रेम करने वालों को , जो सपनो और भावनाओं के बिच संघर्ष करते हैं।

कुछ सपने किताबों में रह गए,

और कुछ किसी कि यादों में।

प्रस्तावना

कुछ कहानियाँ पूरी होकर भी अधूरी रह जाती हैं…
और कुछ अधूरी कहानियाँ ही इंसान को पूरा बना देती हैं।

यह कहानी सिर्फ आरव और अनाया की नहीं है।
यह उन लाखों युवाओं की कहानी है जो हर दिन सपनों, जिम्मेदारियों और भावनाओं के बीच संघर्ष करते हैं।

जहाँ एक तरफ परिवार की उम्मीदें होती हैं…
वहीं दूसरी तरफ दिल में छुपी हुई एक मोहब्बत।

कभी परीक्षा का डर रातों की नींद छीन लेता है,
तो कभी किसी अपने का इंतज़ार इंसान को अंदर से कमजोर कर देता है।

लेकिन जिंदगी की सबसे कठिन लड़ाई वही होती है,
जब इंसान को अपने सपनों और अपने दिल में से किसी एक को चुनना पड़े।

“प्रेम, प्रतीक्षा और परीक्षा — सपनों के बीच खोया”
सिर्फ एक प्रेम कहानी नहीं है।
यह संघर्ष, त्याग, उम्मीद और अधूरी भावनाओं का सफर है।

हो सकता है इस कहानी में आपको अपना कोई हिस्सा दिखाई दे—
कोई अधूरा सपना…
कोई छूटा हुआ इंसान…
या फिर वो दर्द, जिसे आपने कभी किसी से कहा ही नहीं।

अगर ऐसा हो…

तो समझिएगा, यह सिर्फ एक किताब नहीं,

बल्कि आपके दिल का ही एक पन्ना है।

**

लेखक परिचय

मेरा नाम **नितीश कुमार** है। मेरा जन्म १३ अप्रैल २००० को बिहार के औरंगाबाद जिले के अहिरारी गांव में हुआ, मैं मगध विश्वविद्यालय बोधगया से भौतिकी विषय में **M.Sc**. तथा IGNOU **PGDCA** की पढ़ाई कर चुका हूँ। मुझे लेखन, साहित्य, भावनात्मक कहानियाँ और जीवन के वास्तविक अनुभवों को शब्दों में पिरोना पसंद है। मेरी यह पुस्तक **"प्रेम, प्रतीक्षा और परीक्षा — सपनों के बीच खोया"** युवाओं के जीवन, संघर्ष, प्रेम, जिम्मेदारियों और सपनों के बीच चलने वाली उस भावनात्मक यात्रा को दर्शाती है, जिसे आज का हर छात्र कहीं न कहीं महसूस करता है। मैं मानता हूँ कि जीवन में सपने और प्रेम दोनों जरूरी हैं, लेकिन सही समय पर सही निर्णय ही इंसान को उसकी मंजिल तक पहुँचाता है। यह पुस्तक केवल एक कहानी नहीं, बल्कि भावनाओं, संघर्षों और उम्मीदों का आईना है। लेखन मेरे लिए केवल शौक नहीं, बल्कि दिल की बातों को दुनिया तक पहुँचाने का माध्यम है। आशा है कि मेरी यह पहली कृति पाठकों के दिल को छुएगी और उन्हें अपनी कहानी जैसी लगेगी।

धन्यवाद संदेश

मैं अपने माता- पिता एवं गुरुजनों, मित्रों और इस पुस्तक को पूर्ण करने में जिन लोगों ने मेरा मार्गदर्शन, सहयोग और उत्साहवर्धन किया, मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

विशेष रूप से मैं(विजय कुमार यादव) जो प्रयागराज प्रतापगढ़ के रहने वाले है उनको धन्यवाद देता हूँ, जिनके सुझाव, सहयोग और प्रेरणा ने इस पुस्तक को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन सभी लोगों का हृदय से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने मुझे हमेशा प्रेरित किया और आगे बढ़ने का साहस दिया।

धन्यवाद उन पाठकों को, जो इस पुस्तक को पढ़ने के लिए अपना कीमती समय दे रहे हैं। आपके विश्वास और प्रेम के बिना किसी भी लेखक की रचना अधूरी होती है।

यह पुस्तक उन सभी छात्रों और युवाओं को समर्पित है, जो अपने सपनों, जिम्मेदारियों और प्रेम के बीच संघर्ष कर रहे हैं।

आशा करता हूँ कि “प्रेम, प्रतीक्षा और परीक्षा — सपनों के बीच खोया”

आपके दिल को छुएगी और आपको जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देगी।

धन्यवाद!

अध्याय सूची

अध्याय 1 : पहला सपना.. 1

अध्याय 2 : अनकही मोहब्बत.. 3

अध्याय 3 : इंतज़ार की रातें... 5

अध्याय 4: परीक्षा और दबाव 8

अध्याय 5 : परिवार की उम्मीदें 10

अध्याय 6 :टूटता आत्मविश्वास.. 12

अध्याय 7 : संघर्ष की आग... 14

अध्याय 8 : सफलता या प्रेम 16

अध्याय 9 : आख़िरी मुलाकात.. 18

अध्याय 10 : टूटे सपनों की रात 21

अध्याय 11 : माँ की सीख 22

अध्याय 12 : अकेलेपन का सफर 24

अध्याय 13 : एक अनकहा खत... 26

अध्याय 14 : सफलता की पहली सीढ़ी 28

अध्याय 15 : पुरानी यादों की वापसी 29

अध्याय 16 : खुद से मुलाकात 31

अध्याय 17 : सपनों की नई उड़ान..33

अध्याय 18 : अंतिम प्रतीक्षा..35

यह अध्याय क्रम आपकी कहानी के भावनात्मक सफर को बहुत अच्छे तरीके से दिखाता है — प्रेम, संघर्ष, परिवार, परीक्षा और सपनों के बीच फँसे एक युवा की कहानी।

अध्याय 1 : पहला सपना

शाम का समय था। गाँव की सडकें एवं गलियों में धूल उड़ रही थी और दूर मंदिर की घंटियों की आवाज़ हवा में घुल रही थी। सूरज धीरे धीरे ढल रहा था, लेकिन आरव की आँखों में अभी भी एक नया सूरज उग रहा था — एक सपना। सरकारी नौकरी का सपना। उसके कमरे की दीवारों पर पुराने नोट्स कि टुकडे. चिपके थे। लकड़ी की छोटी सी टेबल पर किताबों का ढेर लगा था। कुछ किताबें नई थीं, कुछ इतनी पुरानी कि उनके पन्नों का रंग पीला पड़ चुका था। लेकिन उन पन्नों में आरव को अपना भविष्य दिखाई देता था। घर की हालत बहुत अच्छी नहीं थी।

पिता किसान थे और खेतो में मेहनत करते थे और माँ बर्तन धोने का काम करके घर चलाने में मदद करती थीं। हर महीने खर्चों और उम्मीदों के बीच एक नई लड़ाई होती थी।

लेकिन जब भी कोई पूछता —"आगे क्या करना है?"तो आरव बिना रुके कहता:

"एक दिन बड़ा अधिकारी बनूँगा… और अपने जीवन में सफल होउगां ताकि माँ पापा को फिर कभी किठन परिश्रम और संघर्ष न करना पड़े।"

उसकी आवाज़ में आत्मविश्वास कम और जिम्मेदारियों का भार ज्यादा होता था।

रात के लगभग ग्यारह बज चुके थे। पूरा घर सो चुका था, मगर आरव अभी भी पढ़ रहा था। बाहर हल्की बारिश शुरू हो चुकी थी। टीन की छत पर गिरती बूंदों की आवाज़ टनाटन उसके अकेलेपन की साथी बन गई थी। थोडी देर बाद उसका फोन बजा।

उसकी डिस्पले पर एक नाम चमका और दिखाई दिया — अनाया। आरव कुछ पल तक फोन को देखता रहा। चेहरे पर हल्की मुस्कान आ गई। उसने कॉल उठाई। "इतनी रात तक पढ़ रहे हो?"

अनाया ने धीमी आवाज़ में पूछा।

निंद आंखों में थी पर "सपने जल्दी सोने नहीं देते…"

आरव ने मुस्कुराकर जवाब दिया।

कुछ पल दोनों चुप रहे।

कभी-कभी खामोशी भी बहुत कुछ गहरी कह जाती है।

अनाया वही लड़की थी, जो आरव की साधारण दुनिया को थोड़ा खूबसूरत बना देती थी। वह उसकी कमजोरी भी थी और ताकत भी।

"तुम एक दिन जरूर सफल होगे, और अपना माता पिता का सहारा बनोगे" अनाया ने कहा।

आरव ने खिड़की से बाहर गिरती बारिश को देखा और धीरे से बोला:

"डर बस इस बात का है…कहीं सफलता की दौड़ में तुम्हें खो न दूँ।"

उस रात बारिश बहुत देर तक होती रही। और शायद उसी रात आरव की जिंदगी ने एक नया मोड़ लेना शुरू कर दिया था। क्योंकि हर सपने के साथ एक परीक्षा जुड़ी होती है…और हर प्रेम के साथ एक प्रतीक्षा।

अध्याय 2 : अनकही मोहब्बत

सुबह की हल्की धूप खिड़की से होकर कमरे में फैल रही थी।

आरव किताब खोलकर बैठा था, लेकिन उसकी आँखें शब्दों पर नहीं टिक रही थीं। हर पन्ने के बीच उसे बस एक ही चेहरा दिखाई देता — अनाया।

कुछ रिश्ते नाम नहीं मांगते, बस एहसासों में जीते हैं। कॉलेज की लाइब्रेरी में पहली बार जब आरव ने अनाया को देखा था, तब उसने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन वही लड़की उसकी हर दुआ का हिस्सा बन जाएगी।

अनाया बाकी लड़कियों से अलग थी। वह ज्यादा बोलती नहीं थी, लेकिन उसकी आँखों में एक अजीब सुकून था। जैसे किसी थके हुए इंसान को लंबी यात्रा के बाद छांव मिल जाए। धीरे-धीरे दोनों की बातें बढ़ने लगीं। शायद प्यार

कभी नोट्स के बहाने…कभी परीक्षा के डर से…और कभी बिना किसी वजह के। लेकिन उन बातों में एक बात कभी नहीं आई —मोहब्बत।

आरव कई बार चाहता था कि वह अपने दिल की बात कह दे। जब अनाया उसके लिए चाय लेकर आती…जब वह उसकी छोटी छोटी परेशानियों को बिना बताए समझ जाती…या जब वह कहती:“अपना ध्यान रखा करो।”तब आरव का दिल जोर से धड़कने लगता।

लेकिन हर बार उसके कदम रुक जाते। क्योंकि उसे डर था।

अगर अनाया दूर चली गई तो? एक शाम दोनों कॉलेज की छत पर बैठे थे।

सूरज डूब रहा था और आसमान हल्के नारंगी रंग में रंग चुका था।

अनाया ने अचानक पूछा:"अगर तुम्हें कभी सब कुछ और किसी एक इंसान में से किसी एक को चुनना पड़े… तो क्या चुनोगे?"आरव कुछ पल सोचता रहा और चुप रहा।

उसने अनाया की तरफ देखा, फिर नजरें झुका लीं।"शायद… जिम्मेदारियाँ।" सोचने पर मजबूर कर दी।

अनाया हल्का सा मुस्कुराई, लेकिन उसकी मुस्कान में छुपा दर्द आरव नहीं देख पाया। कभी-कभी लोग "ठीक हूँ" कहकर खामोश रहकर बहुत कुछ छुपा लेते हैं।

उस दिन के बाद दोनों पहले जैसे तो रहे,लेकिन कहीं न कहीं उनके बीच कुछ अनकहा रह गया था। एक ऐसी मोहब्बत…जो दिल में थी, पर शब्दों तक कभी पहुँच नहीं पाई। और शायद यही अधूरी बातें सबसे ज्यादा याद रह जाती हैं।

अध्याय 3 : इंतज़ार की रातें

समय धीरे-धीरे बदल रहा था। कॉलेज कि पढाई खत्म हो चुका था और अब जिंदगी की असली दौड़ शुरू हो गई थी। सुबह किताबें पढना और कुछ काम घर का काम करना दिनभर कोचिंग… और रातभर सपनों का बोझ। लेकर जागते रहना।

आरव अब पहले से ज्यादा गंभीर रहने लगा था। उसके चेहरे की मुस्कान कम होती जा रही थी, और आँखों के नीचे काले घेरे बढ़ते जा रहे थे। जिम्मेदारियाँ एंव ठोकरे इंसान को उम्र से पहले सिखा देती और बड़ा बना देती हैं। लेकिन इन सबके बीच एक चीज़ नहीं बदली थी —

अनाया का इंतज़ार। और उसकी परवाह हर रात पढ़ाई खत्म करने के बाद आरव अपने फोन को बार-बार देखता। और इंतजार करता रहता

शायद उसका मैसेज आए… शायद उसकी कॉल आए…

या शायद सिर्फ एक "कैसे हो?" ही मिल जाए।

लेकिन कई रातें सिर्फ इंतज़ार में गुजर जातीं।

कमरे की दीवार पर लगी एक पुरानी घड़ी जब रात के दो बजती, और टिक टिक कि आवाज सुनाई देती तब भी आरव की आँखों में नींद नहीं होती। बाहर सन्नाटा होता, लेकिन उसके अंदर हजारों सवाल कई बातें उसके दिमाग में चल रहे होते।

“कया अनाया भी मुझे याद करती होगी?”

“क्या मैं उसके लिए उतना ही जरूरी हूँ?”

“या फिर मैं सिर्फ एक दोस्त हूँ?”

इंतज़ार इंसान को सबसे ज्यादा सोचने पर मजबूर करता है।

एक रात अचानक अनाया का मैसेज आया।

“क्या कर रहे हो?”

आरव के चेहरे पर महीनों बाद सच्ची मुस्कान आई।

उसने तुरंत जवाब दिया:

“तुम्हारा इंतज़ार सोने कहाँ देता है।”

कुछ पल तक कोई जवाब नहीं आया।

फिर अनाया का मैसेज उसके स्क्रीन पर दिखाई दिया :

“इतना इंतज़ार मत किया करो…

लोग आदत बन जाते हैं।”

आरव लंबे समय तक उस मैसेज को पढ़ता रहा। और सोचता रहा।

कभी-कभी एक छोटी सी लाइन पूरी रात रुला देती है।

बारिश की भारी बूंदें खिड़की से टकरा रही थीं। उसने फोन अपने छाती से लगाया और आँखें बंद कर लीं। उसे महसूस हो रहा था कि अनाया भी कुछ कहना चाहती है… लेकिन शायद वह भी किसी डर में कैद थी। और वो बोल नहीं पा रही थी।

उस रात दोनों ऑनलाइन थे, लेकिन बात बहुत कम हुई। क्योंकि कुछ रिश्तों में शब्द कम पड़ जाते हैं,

और खामोशी सब कुछ कह देती है। आरव ने आसमान की तरफ देखा और मन ही मन कहा:

"अगर मेरा किस्मत में इंतज़ार लिखा है… तो मैं आखिरी सांस तक करूँगा।"

लेकिन उसे नहीं पता था कि आने वाले दिनों में यह इंतज़ार उसकी सबसे कठिन परीक्षा बनने वाला था।

अध्याय 4: परीक्षा और दबाव

सर्दियों की ठंडी सुबह थी। अलार्म लगातार बज रहा था, लेकिन आरव की आँखें रातभर की जागी हुई थीं। उसने मुश्किल से खुद को उठाया और सामने रखी किताब खोलकर बैठ गया।

अब परीक्षा सिर्फ एक तारीख नहीं रह गई थी। वह उसके परिवार और उसके माता पिता की उम्मीद, समाज के सवाल और उसके भविष्य का फैसला बन चुका था।

घर में प्रतिदिन एक ही चर्चा होती— "परीक्षा कब है?" "तैयारी कैसी चल रही है?" "इस बार तो निकाल लोगे न?" ये सवाल साधारण थे,

लेकिन हर सवाल आरव के दिल पर चोट बनकर दिल पर लगता था।

पिता खेत में काम करके थके हुए लौटते और बिना कुछ कहे उसकी किताबों को देखकर मुस्कुरा देते। उस मुस्कान में भरोसा भी था, और उम्मीद भी।

माँ अक्सर रात में उसके लिए चाय बनाते हुए कहतीं— "बेटा, बस एक बार सफल हो जाओ… फिर सारी परेशानियाँ घर कि परिस्थितियां खत्म हो जाएँगी।" आरव मुस्कुरा देता,

लेकिन अंदर ही अंदर आरव टूटने लगा था। दिनभर पढ़ाई के बाद भी उसे लगता — कुछ याद नहीं हो रहा। कभी किताबों के शब्द उलझ जाते,

तो कभी दिमाग सवालों से भर जाता। और मन अशांत हो जाता

सोशल मीडिया पर दोस्तों की सफलता देखकर उसका आत्मविश्वास और कमजोर पड़ने लगा। किसी का सिलेक्शन हो गया था… कोई नई नौकरी की तस्वीर डाल रहा था… और वह अब भी उसी कमरे में बैठा था, किताबों और उम्मीदों के बीच। एक रात पढ़ते-पढ़ते अचानक उसका सिर दर्द से भारी हो गया। उसने किताब बंद की और बालकोनी की खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया।

बाहर ठंडी हवा चल रही थी, लेकिन उसके अंदर बेचैनी की आग लगी हुई थी। उसी समय अनाया का फोन आया। "कैसे हो?" उसने धीरे से पूछा।

कुछ सेकंड तक आरव बिलकुल चुप रहा। फिर पहली बार उसकी आवाज़ कमजोर पड़ गई। मैं अब अपनी जीवन से "थक गया हूँ, अनाया… समझ नहीं आता इतना दबाव कैसे संभालूँ।" अपने आप पर

फोन के दूसरी तरफ कुछ पल की खामोशी रही। फिर अनाया ने बहुत शांत आवाज़ में कहा— "हर बड़ा सपना दबाव मांगता है, आरव।

लेकिन याद रखना… खुद को खोकर मिली सफलता कभी खुशी नहीं देती।"

उसकी बातें सुनकर आरव की आँखें भर आई। कभी-कभी इंसान को सलाह नहीं, बस किसी अपने का साथ चाहिए होता है। उस रात उसने फिर किताब खोली। थकान अब भी थी, डर भी था… लेकिन कहीं न कहीं उसे महसूस हुआ कि अभी हार मानना बाकी है।

क्योंकि जिंदगी की सबसे कठिन परीक्षा में सिर्फ ज्ञान नहीं, धैर्य और साहस भी पास होना चाहिए।

अध्याय 5 : परिवार की उम्मीदें

गाँव में सुबह जल्दी हो जाती थी। सूरज निकलने से पहले ही आरव के पिता अपने खेतों में काम करने निकल जाते, और माँ बर्तन धोकर अपने आँगन में चूल्हा जलाकर दिन की शुरुआत करतीं। घर छोटा था, लेकिन उसमें सपने बहुत बड़े रहते थे।

आरव जब भी पढ़ने बैठता, उसे महसूस होता कि उसकी किताबों के साथ पूरा परिवार भी जाग रहा है। पिता की मेहनत, माँ की दुआएँ और छोटी बहन की मासूम उम्मीदें — सब उसकी सफलता से जुड़ चुकी थीं।

एक दिन दोपहर में कुछ रिश्तेदार घर आए। बातों-बातों में किसी ने पूछ लिया— “अभी तक नौकरी नहीं लगी?” कमरे में अचानक सन्नाटा छा गया। आरव ने नजरें झुका लीं। उसके पिता हल्का सा मुस्कुराए और बोले—

“मेहनत कर रहा है… एक दिन जरूर सफल होगा।” उनकी आवाज़ में विश्वास था, लेकिन आँखों में छुपी चिंता आरव साफ देख पा रहा था। उस रात वह देर तक सो नहीं पाया। उसे पहली बार महसूस हुआ कि वह सिर्फ अपने सपनों के लिए नहीं लड़ रहा… पूरा परिवार के उम्मीद उसके सहारे भविष्य देख रहा है।

माँ अक्सर अपने छोटे-छोटे खर्चे रोक देतीं एंव पुरानी कपडे पहन लेती ताकि उसकी किताबें आ सकें।

पिता पुराने कपड़ों में ही काम चला लेते, लेकिन उसकी कोचिंग की फीस समय पर भरते। आरव को याद था — एक बार उसने पिता से कहा था:

"इतना खर्च मत कीजिए मेरे ऊपर…" तब पिता ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा था— "बेटा, गरीब आदमी के पास देने के लिए दौलत नहीं होती…

बस उम्मीद होती है।" वह बात आज भी आरव के दिल में गूंजती थी।

धीरे-धीरे परिवार की उम्मीदें उसके लिए प्रेरणा भी बन रही थीं और बोझ भी। हर असफल टेस्ट के बाद उसे डर लगता— अगर वह सफल नहीं हुआ तो? क्या वह अपने माता-पिता की उम्मीदें तोड़ देगा? एक शाम माँ उसके पास आईं। उसके बिखरे नोट्स किताब देखकर बोलीं— "इतना मत सोचो। मेहनत कभी बेकार नहीं जाती।" आरव ने माँ की तरफ देखा। उनके हाथों में मेहनत की दरारें थीं, लेकिन चेहरे पर अब भी विश्वास था। उसने मन ही मन फैसला किया— "अब हार नहीं मानूँगा। क्योंकि मेरे सपनों से पहले मेरे परिवार की उम्मीदें खड़ी हैं।" उस रात पहली बार उसे समझ आया कि कुछ लोग अपने लिए नहीं, अपने अपनों की मुस्कान और खुशी के लिए लड़ते हैं।

अध्याय 6 :टूटता आत्मविश्वास

समय बीतता जा रहा था। परीक्षाएँ एक के बाद एक आती रहीं, लेकिन हर बार रिजल्ट आरव के हाथों से रेत की तरह फिसलता गया। कभी कुछ नंबरों से सेलेक्शन रुक जाता… तो कभी इंटरव्यू तक पहुँचकर सपना बिखर जाता।

हर असफलता के साथ उसका आत्मविश्वास और मनोबल थोड़ा और कम होने लगा।

पहले जो लड़का बड़े विश्वास से कहता था — "मैं एक दिन जरूर सफल होऊँगा," अब वही आईने में खुद की आँखों से नजरें छिपाने लगा था।

उसके कमरे की दीवारों पर लगे मोटिवेशनल कोट्स अब उसे मजाक जैसे लगते थे। किताबें खुली रहतीं, लेकिन घंटों तक एक पन्ना भी नहीं पढ़ा जाता।

दिमाग में सिर्फ एक सवाल घूमता— "क्या मैं सच में इस लायक हूँ?"

धीरे-धीरे उसने लोगों से मिलना कम कर दिया। दोस्तों रिश्तेदारों के फोन आने बंद हो गए। रिश्तेदारों के सवाल अब तानों जैसे लगने लगे। "अभी तक कुछ हुआ नहीं?" "इतनी पढ़ाई का फायदा क्या?" ये शब्द बाहर से छोटे थे, लेकिन बहुत जख्मी थे।

लेकिन अंदर बहुत गहरे चोट कर रहे थे। एक दिन आरव पुराने परिमणाम देख रहा था। उसकी आँखें बार-बार उन "Not Qualified" शब्दों पर जाकर रुक जातीं। अचानक गुस्से में उसने किताबें टेबल से नीचे फेंक दीं।

कमरे में सन्नाटा छा गया। उसकी आँखों में आँसू थे। शायद मेहनत से ज्यादा अब वह खुद से हारने लगा था। उसी समय अनाया का मैसेज आया—

“तुम कैसे हो?” आरव ने फोन देखा, लेकिन जवाब नहीं दिया। कुछ देर बाद फिर मैसेज आया— “हर बार मजबूत दिखना जरूरी नहीं होता।” मैं हार चुका हूं।

यह पढ़ते ही उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। कभी-कभी इंसान दुनिया से नहीं, खुद की उम्मीदों से टूटता है। रात काफी हो चुकी थी।

बाहर अंधेरा था और कमरे की एक छोटी सी लाइट अब भी जल रही थी।

आरव खिड़की के पास जाकर बैठ गया। उसने आसमान की तरफ देखा और धीरे से कहा— “हे ईश्वर … अगर मेरी मेहनत गलत नहीं है, तो मुझे इतना कमजोर मत होने देना।” उस रात उसने पहली बार महसूस किया कि

संघर्ष सिर्फ शरीर को नहीं थकाता, वह आत्मविश्वास को भी धीरे-धीरे तोड़ देता है। लेकिन शायद जिंदगी की सबसे बड़ी लड़ाई वही होती है…

जब इंसान को पूरी दुनिया नहीं, खुद पर फिर से विश्वास करना पड़ता है।

अध्याय 7 : संघर्ष की आग

सर्दियों की वह सुबह बाकी दिनों जैसी नहीं थी। कमरे की खिड़की से आती हल्की धूप भी आरव के चेहरे की उदासी कम नहीं कर पा रही थी। मेज़ पर खुली किताबें, बिखरे नोट्स और दीवार पर टंगा परीक्षा का टाइम-टेबल उसे हर पल उसकी जिम्मेदारियों का एहसास दिला रहे थे। लेकिन उसके भीतर सबसे बड़ा शोर किताबों का नहीं, भावनाओं का था। अनाया से बात हुए कई दिन बीत चुके थे। पहले जहाँ हर सुबह उसके एक संदेश से दिन शुरू होता था, अब वहाँ केवल सन्नाटा था। आरव ने मोबाइल उठाया। स्क्रीन पर अनाया की पुरानी चैट खुली थी।"तुम अपने सपनों को कभी मत छोड़ना…" तुम कभी हार मत मााननना।

उसने गहरी साँस ली और मोबाइल बंद कर दिया।"क्या सच में सपनों के लिए प्रेम को भूलना पड़ता है?"उसने खुद से पूछा। कमरे के बाहर दुनिया तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। दोस्त कोचिंग जा रहे थे, कोई नौकरी की तैयारी में लगा था, तो कोई अपने भविष्य की योजनाएँ बना रहा था।

और आरव …वह अपने ही अंदर एक युद्ध लड़ रहा था। वो बहुत टुटा हुआ था।

दिन बीतते गए। अब उसकी जिंदगी केवल तीन चीज़ों तक सीमित हो चुकी थी —किताबें, मेहनत और इंतज़ार। कई रातें ऐसी होतीं जब पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखें भर आतीं। थकान केवल शरीर में नहीं, दिल में भी थी।

एक दिन कोचिंग से लौटते समय अचानक उसकी मुलाकात अनाया से हो गई। दोनों कुछ पल के लिए वहीं रुक गए।

अनाया पहले जैसी ही थी, लेकिन उसकी आँखों में अब एक अजीब सी दूरी दिखाई दे रही थी। "कैसे हो?" उसने सुरीली आवाज़ में पूछा।

"ठीक ठाक हूँ..." आरव ने मुस्कुराने की कोशिश की। कुछ सेकंड की खामोशी दोनों के बीच दीवार बनकर खड़ी रही। "सुना है, तुम अब पहले से ज्यादा संघर्ष कर रहे हो," अनाया ने कहा।

आरव हल्का सा हँसा।"हाँ... क्योंकि अब खोने के लिए कुछ बचा नहीं।" अनाया उसकी बात सुनकर चुप हो गई। शायद वह समझ चुकी थी कि संघर्ष केवल परीक्षा का नहीं, भावनाओं का भी है। हवा तेज़ चलने लगी थी। शाम का आसमान धीरे-धीरे अंधेरे में बदल रहा था। जाने से पहले अनाया ने बस इतना कहा—"कभी-कभी जिंदगी हमें तोड़ती है... ताकि हम पहले से ज्यादा मजबूत बन सकें।"आरव उसे जाते हुए देखता रहा। उस रात उसने पहली बार खुद से एक वादा किया—"अब मेरा संघर्ष मेरी पहचान बनेगा।"उसने मेज़ पर रखी किताब उठाई और पूरी रात पढ़ता रहा। क्योंकि अब उसके भीतर प्रेम से ज्यादा आग थी —संघर्ष और सफलता की आग।

अध्याय 8 : सफलता या प्रेम

समय अब पहले जैसा नहीं रहा था। आरव की मेहनत रंग लाने लगी थी। मॉक टेस्ट में उसके नंबर बढ़ रहे थे, शिक्षकों की नजरों में उसका नाम आने लगा था, और घरवालों की उम्मीदें अब विश्वास में बदलने लगी थीं। लेकिन जिंदगी शायद कभी एक साथ सब कुछ नहीं देती। जैसे-जैसे आरव अपने सपनों के करीब जा रहा था, वैसे-वैसे वह अनाया से दूर होता जा रहा था। अब उनकी बातें कम होने लगी थीं। पहले जहाँ घंटों रात बातें होती थीं, अब सिर्फ कुछ मिनटों की औपचारिक बातचीत रह गई थी।

“पढ़ाई कैसी चल रही है?” “ठीक।” “खाना खाया?” “हाँ।” बस इतना ही।

एक समय जो खामोशी सुकून देती थी, अब वही दूरी महसूस कराने लगी थी। एक शाम अनाया ने आरव को मिलने बुलाया। शहर के उसी पुराने पार्क में, जहाँ दोनों पहली बार बिना किसी वजह के घंटों देर बैठते थे। सूरज ढल रहा था। हवा में हल्की ठंडक थी। दोनों एक बेंच पर साथ बैठे थे, लेकिन आज उनके बीच पहले जैसी सहजता कायम नहीं थी। कुछ देर बाद अनाया ने धीरे से पूछा— “अगर तुम्हें कभी अपने सपने और अपने प्यार में से किसी एक को चुनना पड़े… तो क्या चुनोगे?” आरव चुप रहा। यह सवाल नया नहीं था,

लेकिन आज इसका जवाब पहले से ज्यादा कठिन था।

उसने गहरी साँस ली और कहा— “मैंने हमेशा जिम्मेदारियों को चुना है, अनाया। क्योंकि मेरे पीछे मेरा परिवार और मेरा सपना है।”

अनाया मुस्कुराई, लेकिन उसकी आँखें में थोडी सी आंसू आ चुकी थीं। “और अगर कभी जिम्मेदारियों की भीड़ में मैं खो गई तो?” आरव के पास कोई जवाब नहीं था। कभी-कभी जिंदगी ऐसे मोड़ पर ला खड़ा करती है, जहाँ हर जवाब किसी न किसी को दुख देता है। हवा धीरे-धीरे तेज होने लगी थी। पेड़ों से सूखे पत्ते गिर रहे थे, जैसे वक्त भी कुछ छीनकर आगे बढ़ रहा हो। अनाया ने पहली बार बहुत कमजोर आवाज़ में कहा— “मैं तुम्हारे संघर्ष और तेरे परिवार के सपनों के बीच बोझ नहीं बनना चाहती।” आरव तुरंत बोला— “तुम कभी बोझ नहीं थीं।” और नही कभी रहेगी “लेकिन शायद तुम्हारी मंजिल भी नहीं…” अनाया ने मुस्कुराते हुए कहा। उसकी यह बात आरव के दिल में कहीं गहराई तक उतर गई। उस शाम दोनों साथ बैठे रहे, लेकिन पहले की तरह कोई भविष्य की बातें नहीं हुईं। सिर्फ खामोशी थी… और दो लोगों के बीच बढ़ती हुई दूरी। घर लौटते समय आरव के मन में एक ही सवाल बार-बार गूंज रहा था— “क्या हर सफलता की कीमत किसी अपने प्रेम और रिश्तेदार को खोकर ही चुकानी पड़ती है?” उस रात उसने बहुत देर तक किताब खोले रखी, लेकिन शब्द धुंधले दिखाई दे रहे थे। क्योंकि जिंदगी अब उससे सिर्फ परीक्षा नहीं ले रही थी… वह उसके दिल का फैसला भी मांग रही थी। अभी आरव की जीवन एक अजीब मोड पर आकर खडी थी आगे कुंआ और पीछे खाई, यही दिखाई दे रही थी। फिर भी आरव अपने दिल पर पथर रखे हुआ है।

अध्याय 9 : आख़िरी मुलाकात

बारिश का मौसम फिर लौट आया था। आसमान में घने बादल वही भीगी सड़कें, वही ठंडी हवाएँ… लेकिन इस बार सब कुछ अलग महसूस हो रहा था। आरव की परीक्षा अब बहुत करीब थी। उसकी जिंदगी उस मोड़ पर खड़ी थी जहाँ पीछे मुड़ने की जगह नहीं बची थी। लेकिन दिल अब भी एक जगह अटका हुआ था — अनाया। कई दिनों से दोनों की ठीक से बात नहीं हुई थी। न कोई लंबी कॉल… न देर रात के मैसेज… और न ही पहले जैसी शिकायतें। सब कुछ अलग सी लग रही थी।

जैसे दोनों धीरे-धीरे एक-दूसरे को खोने की आदत बना रहे हों। एक शाम अचानक अनाया का मैसेज आया— "कल मिल सकते हो? शायद आख़िरी बार…" यह पढ़ते ही आरव का दिल जोर से धड़क उठा। अगले दिन वह उसी रेलवे स्टेशन पहुँचा, जहाँ से कभी अनाया ने उसे पहली बार विदा कहा था। आसमान में बादल छाए थे और प्लेटफॉर्म पर हल्की भीड़ थी। अनाया सफेद सूट में खड़ी थी। चेहरे पर वही सुकून था… लेकिन आँखों में अब पहले जैसी चमक नहीं थी। कुछ पल दोनों बस एक-दूसरे को देखते रहे। कभी-कभी आख़िरी मुलाकात में शब्द साथ छोड़ देते हैं। आरव धीरे से उसके पास आया और बोला— "कैसी हो तुम ?" अनाया हल्का सा मुस्कुराई— "ठीक हूँ… शायद।" उस "शायद" में बहुत दर्द छुपा था।

ट्रेन आने में अभी बहुत समय था। दोनों प्लेटफॉर्म की एक खाली पत्थरों के कुर्सी पर जाकर बैठ गए। कुछ देर तक सिर्फ बारिश की बूंदों की आवाज़ सुनाई देती रही।

फिर अनाया ने धीरे से कहा— "तुम बदल गए हो, आरव।" आरव ने नजरें झुका लीं। "शायद वक्त ने बदल दिया।" अनाया उसकी तरफ देखते हुए बोली—

"नहीं… वक्त ने सिर्फ तुम्हें मजबूत बनाया है। लेकिन उस मजबूती में कहीं तुम खुद को पीछे छोड़ आए हो।" आरव की आँखें में आंसू टिपक आई। वह बहुत कुछ कहना चाहता था— कि उसने हर सफलता में अनाया को देखा है… कि उसकी हर दुआ में आज भी वही शामिल है… लेकिन कुछ बातें दिल से निकलकर होंठों तक नहीं पहुँच पातीं। अचानक स्टेशन पर ट्रेन की आवाज़ सुनाई पड उठी।

अनाया धीरे से खड़ी हुई। "अब चलना चाहिए…" उस एक पल में आरव को लगा जैसे समय उसके हाथों से फिसल रहा हो। उसने काँपती आवाज़ में पूछा— "क्या यह सच में आख़िरी मुलाकात है?" अनाया कुछ सेकंड चुप रही।

फिर उसकी आँखों से एक आँसू गिर पड़ा। "कुछ लोग जिंदगी में हमेशा के लिए नहीं आते… लेकिन हमेशा याद रहने के लिए जरूर आते हैं।" ट्रेन धीरे-धीरे प्लेटफॉर्म पर रुक चुकी थी।

अनाया अंदर चली गई।

खिड़की के पास खड़े होकर उसने आख़िरी बार आरव को देखा और हल्की सी मुस्कान दी। ट्रेन चल पड़ी। आरव वहीं खड़ा रहा… जब तक ट्रेन उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गई। बारिश और तुफान अब तेज हो चुकी थी।

लेकिन शायद उससे ज्यादा तूफान उसके अंदर चल रहा था। उसने आसमान की तरफ देखा और मन ही मन कहा— "कुछ मोहब्बतें मुकम्मल नहीं होतीं… फिर भी जिंदगी भर अधूरी नहीं लगतीं।" उस दिन आरव ने सिर्फ अनाया को नहीं खोया था… उसने अपने जीवन का सबसे खूबसूरत हिस्सा विदा होते देखा था। आरव वहीं बैठ कर अपने आंसू भरे दिल को मनाता रहा। और थोडी देर बाद अपने घर के तरफ लौट चला जैसे उसकी जीवन में सब कुछ खत्म हो गया हो।

अध्याय 10 : टूटे सपनों की रात

रात बहुत शांत थी। कमरे की खिड़की से आती ठंडी हवा भी आज दिल को सुकून नहीं दे पा रही थी। मेज पर खुली किताबें थीं, लेकिन शब्द धुंधले लग रहे थे। आँखें पन्नों पर थीं, पर मन कहीं और भटक रहा था। उसने धीरे से मोबाइल उठाया। पुरानी चैट अब भी वहीं थी — अधूरी बातें, छोटे-छोटे झगड़े, और ढेर सारी यादें। आखिरी मैसेज पढ़कर उसकी आँखें नम हो गईं।"तुम अपने सपनों पर ध्यान दो… शायद यही हमारे लिए सही है।"वह मुस्कुराना चाहता था, लेकिन दर्द मुस्कान से बड़ा था।

बाहर आसमान में चाँद अकेला था, ठीक उसकी तरह। उस रात उसे पहली बार महसूस हुआ कि कुछ सपने पूरे होने के लिए नहीं होते, कुछ सिर्फ इंसान को मजबूत बनाने आते हैं। घड़ी में रात के दो बज चुके थे। किताबें अब भी खुली थीं, परीक्षा करीब थी, लेकिन दिल हार मान चुका था। उसने खुद से पूछा—"क्या सच में प्रेम और सपने एक साथ पूरे नहीं हो सकते?"कमरे की दीवारें खामोश थीं। लेकिन उस खामोशी में भी उसे उसकी आवाज सुनाई दे रही थी। उसने डायरी खोली और लिखना शुरू किया— "आज फिर तेरी यादों ने सोने नहीं दिया,और मेरे टूटे सपनों ने रोने नहीं दिया। मैं हारना नहीं चाहता था,पर जिंदगी ने मुझे थोड़ा और मजबूत बना दिया।"

कलम रुक गई। आँसू डायरी के पन्नों पर गिर चुके थे उस रात उसने कोई फैसला नहीं लिया।

न प्रेम छोड़ पाया, न सपने। बस चुपचाप अंधेरे कमरे में बैठा रहा…टूटे सपनों और अधूरी मोहब्बत के बीच।

अध्याय 11 : माँ की सीख

सुबह की पहली किरण कमरे में आई, लेकिन उसकी आँखों में रात अब भी बाकी थी। पूरी रात जागने के बाद वह चुपचाप किताबों के बीच बैठा था। चेहरे की थकान साफ दिखाई दे रही थी। तभी माँ कमरे में आई। हाथ में चाय का कप था और चेहरे पर वही पुरानी ममता। माँ ने धीरे से पूछा,

“बेटा, सब ठीक ठाक है न?” उसने हमेशा की तरह मुस्कुराने की कोशिश की और कहा,

“हाँ माँ, बस पढ़ाई का तनाव है।” और कुछ नहीं।

माँ उसके पास बैठ गई। शायद माँ शब्दों से ज्यादा खामोशी समझती हैं। उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखकर और बोलीं—“जिंदगी में हर चीज आसानी से नहीं मिलती। बेटा

कुछ लोग साथ छोड़ देते हैं, कुछ सपने टूट जाते हैं कुछ अपने भूल जाते है …लेकिन मेहनत और हिम्मत कभी धोखा नहीं देती।” वह चुपचाप माँ की बातें सुनता रहा। माँ ने मेज पर रखी डायरी देखी। उसमें आँसुओं से फैले कुछ शब्द अब भी दिख रहे थे।

माँ मुस्कुराईं और बोलीं—

“अगर रोने से सब कुछ ठीक हो जाता, तो दुनिया में बहुत वैसे इंसान हैं जो सब कुछ खोकर दुखी है बेटा, इंसान की असली पहचान उसके बुरे समय में होती है।” उनकी आवाज में अपनापन था, लेकिन शब्दों में गहरी सच्चाई।

“तुम्हारे सपने बहुत बड़े हैं। किसी के जाने से अपने सपनों को मत छोड़ो। जिस दिन तुम सफल हो जाओगे, यही दर्द यही यादे तुम्हारी ताकत बन जाएगा।” उसकी आँखें नम हो गईं। उसे पहली बार लगा कि शायद वह अकेला नहीं है। माँ उठीं और जाते-जाते बोलीं—

“याद रखना बेटा, जिंदगी में हार वही मानता है,जो कोशिश करना छोड़ देता है।”उनके जाने के बाद उसने किताब उठाई। कई दिनों बाद पहली बार उसे लगा कि शायद अभी सब खत्म नहीं हुआ।

उसने डायरी के आखिरी पन्ने पर लिखा—“माँ की बातें दवा जैसी होती हैं,दर्द तो नहीं मिटातीं, पर हिम्म्त बहुत कायम रखती है और एक उम्मीद के साथ जीने की हिम्मत जरूर दे जाती हैं।”

अध्याय 12 : अकेलेपन का सफर

समय धीरे-धीरे बितता गया ,लेकिन उसके अंदर सब कुछ जैसे वहीं ठहर गया था।

अब न पहले जैसी मुस्कान थी, न दोस्तों के साथ लंबी बातें। भीड़ में रहकर भी वह खुद को अकेला महसूस करने लगा था। कॉलेज की सडकों में चलते हुए उसे हर जगह पुरानी यादें पुरानी बातें दिखाई देतीं।

वही रास्ते, वही क्लासरूम, वही दोस्त वही चाय की दुकान…लेकिन अब साथ चलने वाला कोई नहीं था।

दोस्त अक्सर कहते—"इतना चुप क्यों रहने लगा है?"वह बस हल्की मुस्कान देकर बात और कुछ बात बनाकर टाल देता। पर इसकी अंदर कि गहराई समझने की किसी ने कोशिश नहीं की।

क्योंकि कुछ दर्द ऐसे होते हैं, जिन्हें शब्दों में नहीं बयान किया जा सकता। रातें अब और बडी लगने लगी थीं। किताबें और नोटस सामने खुली रहतीं, लेकिन मन बार-बार बीते दिनों में खो जाता। कभी प्रेम की यादें उसे कमजोर करतीं, तो कभी अधूरे सपने उसे बेचैन कर देते। एक दिन उसने आईने में खुद को देखा।

आँखों के नीचे काले घेरे थे और चेहरे पर थकान साफ दिखाई दे रही थी। उसे महसूस हुआ कि अकेलापन इंसान को अंदर से धीरे-धीरे तोड़ देता है। लेकिन उसी पल उसके अंदर एक आवाज उठी—

“अगर आज मैं थक कर रुक गया, तो जिंदगी भर पछताना पड़ेगा।”उसने धीरे से अपनी किताब बंद की और आसमान की तरफ देखा। चाँद आज भी अकेला था…लेकिन फिर भी हर रात चमकता था। उस रात उसने फैसला किया कि अब वह अपने दर्द को कमजोरी नहीं बनने देगा। अकेलापन उसका दुश्मन नहीं, उसकी ताकत बनेगा। उसने अपनी डायरी में लिखा—“अकेले चलना आसान नहीं होता,

लेकिन यही सफर इंसान को मजबूत बनाता है। जब कोई साथ नहीं देता, तब खुद का हौसला ही सबसे बड़ा सहारा बनता है।” धीरे-धीरे वह समझने लगा था कि जिंदगी हर किसी को एक ऐसा दौर जरूर देती है, जहाँ इंसान को खुद से लड़ना पड़ता है। और शायद…उसका असली सफर अब शुरू हुआ था।

अध्याय 13 : एक अनकहा खत

उस रात बारिश बहुत तेज हो रही थी। खिड़की के बाहर गिरती बूंदें टिप टिप जैसे उसके दिल की आवाज बन चुकी थीं। कमरे में हल्का अंधेरा था और मेज पर रखी पुरानी तस्वीरें फिर से यादों को जगा रही थीं। बहुत दिनों बाद उसने अपनी पुरानी डायरी खोली। पन्नों के बीच दबा एक सूखा गुलाब अब भी वैसा ही था — अधूरा, लेकिन संभाला हुआ। उसने कलम उठाई। कई बार सोचने के बाद आखिर उसने खत लिखना शुरू किया—

प्रिय…अनाया

पता नहीं तुम्हें यह खत कभी मिलेगा भी या नहीं। शायद मैं इसे कभी भेज भी न पाऊँ।

लेकिन दिल में जो बातें सालों से दबी थीं, आज उन्हें शब्द देना चाहता हूँ। तुम्हारे जाने के बाद जिंदगी रुक तो नहीं गई, लेकिन पहले जैसी भी नहीं रही। मैं आज भी भीड़ में तुम्हें खोज लेता हूँ,

और हर मुस्कुराते चेहरे में तुम्हारी झलक दिखाई देती है। कई रातें ऐसी बीतीं,जब किताबें खुली थीं, लेकिन आँखें सिर्फ तुम्हें याद कर रही थीं। मैंने खुद को बहुत समझाया कि अब आगे बढ़ना है…

लेकिन कुछ रिश्ते दिल से कभी खत्म नहीं होते। तुम जानती हो? मैं आज भी वही इंसान हूँ,

जो तुम्हारे एक मैसेज पर सारी दुनिया भूल जाता था। लेकिन अब कोई शिकायत नहीं है।

क्योंकि शायद हमारा साथ किस्मत में नहीं था। तुमने मुझे छोड़कर सिर्फ दर्द नहीं दिया…

तुमने मुझे मजबूत बनना भी सिखाया। अगर कभी मेरी याद आए,तो बस इतना याद रखना—

किसी ने तुम्हें सच्चे दिल से चाहा था।— तुम्हारा अधूरा प्यार

खत लिखते-लिखते उसकी आँखें भर आईं। कुछ आँसू कागज पर गिर चुके थे, जिससे कुछ शब्द धुंधले हो गए थे। और कागज की टुकडा नम हो गई थी उसने खत को मोड़ा, डायरी में रखा और धीरे से हंसकर रख दिया।

वह जानता था कि यह खत शायद कभी भेजा नहीं जाएगा। लेकिन दिल का बोझ थोड़ा हल्का जरूर हो गया था। उस रात उसने महसूस किया— "हर प्रेम कहानी का अंत मिलन नहीं होता,

कुछ कहानियाँ अधूरी रहकर ही सबसे खूबसूरत बन जाती हैं।"

अध्याय 14 : सफलता की पहली सीढ़ी

समय कभी किसी के लिए नहीं रुकता। धीरे-धीरे दर्द की जगह जिम्मेदारियों ने ले ली थी। अब उसकी रातें सिर्फ यादों में नहीं, किताबों के बीच गुजरने लगी थीं। वह हर सुबह खुद से एक ही बात कहता—“एक दिन मुझे सफल होकर दिखाना है।”कई महीनों की मेहनत के बाद आखिर वह दिन आ गया, जिसका उसे लंबे समय से इंतजार था। परीक्षा का परिणाम आने वाला था। उसके हाथ काँप रहे थे। दिल की धड़कन तेज थी। मोबाइल स्क्रीन पर रिजल्ट खुलने में जैसे सदियाँ लग रही थीं। और फिर… उसकी आँखें अचानक रुक गई। उसका चयन हो चुका था। कुछ पल के लिए उसे विश्वास ही नहीं हुआ। जिस लड़के ने कभी टूटकर हार मानने की सोची थी, आज वही अपनी मेहनत की पहली जीत देख रहा था। उसकी आँखों में आँसू थे, लेकिन इस बार दर्द के नहीं… खुशी के। वह भागकर माँ के पास गया और धीरे से बोला—“माँ… हो गया।”माँ की आँखें चमक उठीं। उन्होंने उसे गले लगा लिया। उस पल उसे महसूस हुआ कि असली खुशी सिर्फ अपने लिए नहीं,उन लोगों के लिए सफल होने में है जिन्होंने हर हाल में उसका साथ दिया। रात को उसने अपनी पुरानी डायरी निकाली। वही डायरी जिसमें कभी टूटे सपनों और अधूरी मोहब्बत के दर्द लिखे थे। उसने आखिरी पन्ने पर लिखा—“मेहनत कभी बेकार नहीं जाती। दर्द इंसान को तोड़ता जरूर है, लेकिन अगर हौसला जिंदा हो,तो वही दर्द एक दिन सफलता की वजह बन जाता है।”खिड़की से आती ठंडी हवा आज अलग लग रही थी। कई दिनों बाद उसके चेहरे पर सच्ची मुस्कान थी। उसे पता था कि यह मंजिल नहीं,बस सफलता की पहली सीढ़ी थी।

अध्याय 15 : पुरानी यादों की वापसी

सफलता मिलने के बाद जिंदगी धीरे-धीरे बदलने लगी थी। अब उसके चेहरे पर पहले जैसी उदासी कम दिखाई देती थी। लोग उसकी मेहनत की तारीफ करने लगे थे, लेकिन दिल के किसी कोने में कुछ यादें अब भी चुपचाप जिंदा थीं। एक शाम वह शहर की पुरानी सड़क से गुजर रहा था। सूरज ढल रहा था और ठंडी हवा पुराने दिनों की तरह महसूस हो रही थी। तभी अचानक उसकी नजर सामने खड़ी एक परिचित लड़की पर पड़ी। वह कुछ पल के लिए रुक गया। दिल की धड़कन अचानक तेज हो गई। वह वही थी… जिसे भूलने की कोशिश में उसने न जाने कितनी रातें गुजारी थीं। दोनों की नजरें मिलीं, लेकिन शब्द जैसे कहीं खो गए थे। कुछ देर की खामोशी के बाद उसने धीरे से कहा— “कैसे हो?” उसने हल्की मुस्कान के साथ जवाब दिया— “ठीक हूँ… तुम कैसी हो?”

इतने छोटे सवाल में भी हजारों अधूरी बातें छिपी हुई थीं। हवा आज फिर पुरानी यादों को छू रही थी। उसे वह दिन याद आने लगे जब दोनों घंटों साथ बैठकर सपनों की बातें किया करते थे।

लेकिन अब बहुत कुछ बदल चुका था। वह पहले जैसा कमजोर लड़का नहीं रहा था।

दर्द ने उसे मजबूत बना दिया था। उसने देखा कि उसकी आँखों में भी कहीं न कहीं अधूरापन अब भी बाकी था। कुछ देर बात करने के बाद वह जाने लगी।

लेकिन जाते-जाते उसने एक बात कही—“मुझे हमेशा यकीन था कि तुम एक दिन जरूर सफल होगे।” यह सुनकर उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान आ गई। शायद कुछ रिश्ते पूरी तरह खत्म नहीं होते। वे बस समय के साथ खामोश हो जाते हैं। उस रात उसने अपनी डायरी में लिखा—“कुछ लोग जिंदगी से चले जरूर जाते हैं,लेकिन उनकी यादें कभी नहीं जातीं। वक्त बदल जाता है,मगर दिल के कुछ एहसास हमेशा वैसे ही रहते हैं।”

खिड़की से बाहर आसमान शांत था। लेकिन उसके अंदर यादों का एक तूफान फिर से लौट आया था।

अध्याय 16 : खुद से मुलाकात

पुरानी यादों से हुई उस मुलाकात के बाद वह पूरी रात सो नहीं पाया। बीते हुए पल बार-बार उसकी आँखों के सामने आ रहे थे। लेकिन इस बार दर्द पहले जैसा नहीं था। कुछ बदल चुका था… शायद वह खुद। सुबह वह अकेले शहर के बाहर नदी किनारे चला गया। हल्की ठंडी हवा चल रही थी और पानी की लहरें शांत होकर बह रही थीं। वह काफी देर तक वहीं बैठा आसमान को देखता रहा।

पहली बार उसने खुद से सवाल किया— “मैं आखिर किसके लिए भाग रहा था? प्रेम के लिए… या अपने सपनों के लिए?” कुछ देर की खामोशी के बाद उसे जवाब भी मिल गया।

असल में वह हमेशा दूसरों को पाने में लगा रहा, लेकिन कभी खुद को समझने की कोशिश की ही नहीं थी। उसे एहसास हुआ कि जिंदगी की सबसे बड़ी लड़ाई किसी और से नहीं, खुद से लडनी होती है।

जिस दर्द को वह अपनी कमजोरी समझता था, वही दर्द अब उसकी ताकत बन चुका था। जिस अकेलेपन से वह डरता था, उसी ने उसे खुद से मिलवा दिया था। उसने अपनी आँखें बंद कीं और गहरी सांस ली। आज कई दिनों बाद उसके दिल में सुकून था।

अब उसे किसी से शिकायत नहीं थी। न किस्मत से, न अधूरे प्रेम से। क्योंकि वह समझ चुका था कि हर बिछड़ना इंसान को कुछ सिखाने के लिए होता है। उसने मुस्कुराते हुए आसमान की तरफ देखा।

सूरज धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था, जैसे नई शुरुआत का संकेत दे रहा हो। उसने अपनी डायरी निकाली और लिखा—"जब इंसान खुद को समझने लगता है,तब जिंदगी आसान नहीं होती…लेकिन मजबूत जरूर हो जाती है। क्योंकि सबसे खूबसूरत मुलाकात,खुद से मुलाकात होती है।"उस दिन पहली बार उसे लगा कि अब वह सिर्फ सपनों के पीछे भागने वाला लड़का नहीं रहा। अब वह अपनी जिंदगी को समझने लगा था। और शायद…यहीं से उसकी असली जीत शुरू हुई थी।

अध्याय 17 : सपनों की नई उड़ान

अब उसकी जिंदगी पहले जैसी नहीं रही थी। वह लड़का, जो कभी अधूरी मोहब्बत और टूटे सपनों में खोया रहता था, आज अपनी मंजिल की तरफ बढ़ना सीख चुका था। सुबह जल्दी उठना, घंटों मेहनत करना और हर दिन खुद को पहले से बेहतर बनाना अब उसकी आदत बन चुकी थी। उसकी आँखों में अब सिर्फ किसी का इंतजार नहीं,बल्कि अपने सपनों को पूरा करने की चमक थी। एक दिन वह अपनी पुरानी डायरी के पन्ने पलट रहा था। हर पन्ने में दर्द था, इंतजार था, अधूरी बातें थीं। लेकिन उन सबके बीच एक चीज हमेशा जिंदा थी — उसका हौसला। वह हल्का सा मुस्कुराया और खुद से बोला—"अगर इतना दर्द सहकर भी मैं खड़ा हूँ, तो अब मुझे कोई नहीं रोक सकता।" धीरे-धीरे उसकी मेहनत रंग लाने लगी। लोग अब उसे पहचानने लगे थे। जो कभी उसकी खामोशी को कमजोरी समझते थे,आज वही उसकी मेहनत की मिसाल देने लगे। लेकिन सफलता के इस सफर में भी उसने अपने पुराने दिनों को कभी नहीं भुलाया। क्योंकि वही दर्द उसे आगे बढ़ने की ताकत देता था। एक शाम वह छत पर खड़ा डूबते सूरज को देख रहा था। आसमान में उड़ते पक्षियों को देखकर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। उसे महसूस हुआ कि सपने भी उन पक्षियों की तरह होते हैं—

अगर हिम्मत हो, तो खुला आसमान खुद रास्ता दे देता है। उसने अपनी डायरी में लिखा—"सपने देखने वालों की हार नहीं होती,अगर इरादे मजबूत हों तो

रास्ते खुद बन जाते हैं। दर्द सिर्फ कहानी का हिस्सा होता है,मंजिल नहीं।"अब उसकी सोच बदल चुकी थी। वह सिर्फ किसी का इंतजार करने वाला इंसान नहीं रहा था। अब वह अपने सपनों को नई उड़ान देने निकल चुका था। और इस बार…उसे खुद पर पूरा विश्वास था।

अध्याय 18 : अंतिम प्रतीक्षा

समय के साथ बहुत कुछ बदल गया था उसकी जिंदगी अब पहले से ज्यादा व्यवस्थित हो चुकी थी।

सपनों को नई उड़ान मिल चुकी थी, और सफलता धीरे-धीरे उसके कदम चूम रही थी। लेकिन दिल के किसी शांत कोने में एक प्रतीक्षा अब भी बाकी थी। वह प्रतीक्षा किसी इंसान की थी…या शायद उन अधूरे एहसासों की, जिन्हें वह कभी पूरी तरह भूल नहीं पाया। एक रात वह फिर उसी पुराने रेलवे स्टेशन पर जा पहुँचा, जहाँ कभी दोनों ने साथ बैठकर भविष्य के सपने देखे थे। प्लेटफॉर्म पर हल्की भीड़ थी, लेकिन उसके भीतर अजीब सी खामोशी थी। ठंडी हवा के साथ पुरानी यादें फिर लौट आईं। उसने जेब से वह पुराना खत निकाला,जो उसने कभी भेजा नहीं था। कागज अब थोड़ा पीला पड़ चुका था, लेकिन शब्द आज भी उतने ही सच्चे थे। वह बेंच पर बैठकर दूर जाती ट्रेनों को देखता रहा।

हर आती-जाती ट्रेन उसे जिंदगी जैसी लग रही थी—कुछ लोग आते हैं, कुछ चले जाते हैं, लेकिन सफर कभी नहीं रुकता। तभी अचानक उसका मोबाइल बजा। स्क्रीन पर एक नाम चमका…उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। कई सालों बाद उसका संदेश आया था—"क्या तुम अब भी नाराज़ हो?"वह कुछ पल तक स्क्रीन को देखता रहा। उसके पास हजारों शब्द थे,लेकिन उंगलियाँ खामोश थीं। बहुत देर बाद उसने सिर्फ इतना लिखा—"नाराज़ नहीं…बस अब

पहले जैसा नहीं रहा।"संदेश भेजने के बाद उसने गहरी सांस ली। आज पहली बार उसे लगा कि शायद उसकी प्रतीक्षा खत्म होने लगी है। कुछ रिश्तों का अंत लड़ाई से नहीं होता,बल्कि समय धीरे-धीरे उन्हें शांत कर देता है। उसने आसमान की तरफ देखा। रात पहले जैसी ही थी,लेकिन उसके दिल का बोझ अब थोड़ा हल्का था। उसने डायरी के आखिरी पन्नों में लिखा— "हर इंतजार का अंत मिलन नहीं होता,कुछ प्रतीक्षाएँ इंसान को बदलने के लिए मजबूर कर देती हैं। और जब इंसान बदल जाता है,तब उसे किसी जवाब की जरूरत नहीं रहती।"उस रात उसने पहली बार अपने अतीत को मुस्कुराकर अलविदा कहा।

— समाप्त —

कुछ कहानियाँ पूरी होकर भी अधूरी रह जाती हैं।

"प्रेम, प्रतीक्षा और परीक्षा — सपनों के बीच खोया" की यह यात्रा केवल आरव और अनाया की नहीं, बल्कि हर उस इंसान की कहानी है जिसने सपनों और भावनाओं के बीच संघर्ष किया है।

जिंदगी हमें हमेशा वही नहीं देती जो हम चाहते हैं, लेकिन संघर्ष हमें वह इंसान जरूर बना देता है जो हम बनना चाहते हैं।

लेखक की ओर से संदेश

लेखक की कलम से

प्रिय पाठकों,

यह मेरी पहली पुस्तक है, जिसमें मैंने विद्यार्थियों की भावनाओं, संघर्ष और सपनों को शब्दों में उतारने की कोशिश की है।

यदि इस कहानी का कोई हिस्सा आपके दिल को छू पाया हो, तो मेरा प्रयास सफल होगा।

आपके प्रेम और समर्थन के लिए धन्यवाद।

— Nitish Kumar

धन्यवाद

मेरे परिवार, मित्रों और सभी पाठकों को दिल से धन्यवाद।

"हर अंत, एक नई शुरुआत होती है..."

एक साधारण् लडके की असाधारण कहानी जहां सपनों कि दौड में प्रेम में पिछे छुट जाता है लेकिन उसकी यादें जिन्दगी की सबसे बडी ताकत बन जाती है